

Quick word tests

तरक्क्री	तरक्की	आह्लाद	आह्लाद	फ्रीज	फ्रीज	मगज़	मगज़	हृत्स्थल	हृत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्ज़े	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्प	उत्प	पंक्ति	पंक्ति	उत्सुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्प	उत्प	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्ज़ाम	रत्न	रत्न	दुर्लभ्य	दुर्लभ्य	सद्गन्थ	सद्गन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्शात	दर्शात	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज़्ज	उज़्ज	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक्क्री	तरक्क्री	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्लाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ़ैक्चर	फ़ैक्चर	हिंस	हिंस	द्रव	द्रव	हास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्र्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	काफी	काफी	रक्त	रक्त	विशाखपटनम	विशाखपटनम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त्र	वक्त्र	ट्रेन	ट्रेन	मंज़ी	मंज़ी	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्जत	इज़्जत	स्नेह	स्नेह	वक्त्र	वक्त्र	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्वां	ध्वां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्हो	दीन्हो	कुरी	कुरी
पद्य	पद्य	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख्त	सख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्जी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख्म	ज़ख्म	सपत्न्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	स्त्रिष्टां	स्त्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़र्र	फ़र्र	ल्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्र्यास	अग्र्यास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सैंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

सैंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date: Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date: Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इवेंट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालों को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट ॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान ॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालों को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

पपकपवपवकवव
 पपखपवपवखवव
 पपगपवपवगवव
 पपघपवपवघवव
 पपङपवपवङवव
 पपचपवपवचवव
 पपछपवपवछवव
 पपजपवपवजवव
 पपझपवपवझवव
 पपञपवपवञवव
 पपटपवपवटवव
 पपठपवपवठवव
 पपडपवपवडवव
 पपढपवपवढवव
 पपणपवपवणवव
 पपतपवपवतवव
 पपथपवपवथवव
 पपदपवपवदवव
 पपधपवपवधवव
 पपनपवपवनवव
 पपपपवपवपवव
 पपफपवपवफवव
 पपबपवपवबवव
 पपभपवपवभवव
 पपमपवपवमवव
 पपयपवपवयवव
 पपरपवपवरवव
 पपलपवपवलवव
 पपळपवपवळवव
 पपवपवपवववव
 पपशपवपवशवव
 पपषपवपवषवव

पपहपवपवहवव
पपक्पवपवक्वव
पपखपवपवखवव
पपगपवपवगवव
पपजपवपवजवव
पपङपवपवङवव
पपढपवपवढवव
पपफपवपवफवव
पपयपवपवयवव
पपक्षपवपवक्षवव
पपज्ञपवपवज्ञवव

पपअपवपवअवव
पपअैपवपवअैवव
पपअँपवपवअँवव
पपइपवपवइवव
पपईपवपवईवव
पपउपवपवउवव
पपऊपवपवऊवव
पपएपवपवएवव
पपऐपवपवऐवव
पपँपवपवँवव
पपैपवपवैवव
पपआपवपवआवव
पपओपवपवओवव
पपऔपवपवऔवव
पपऋपवपवऋवव
पपॠपवपवॠवव
पपऌपवपवऌवव
पपॡपवपवॡवव

पपक्रपवपवक्रवव
 पपस्त्रपवपवस्त्रवव
 पपग्रपवपवग्रवव
 पपघ्नपवपवघ्नवव
 पपङ्गपवपवङ्गवव
 पपच्नपवपवच्नवव
 पपछ्नपवपवछ्नवव
 पपज्जपवपवज्जवव
 पपझपवपवझवव
 पपञ्जपवपवञ्जवव
 पपट्पवपवट्पवव
 पपठ्पवपवठ्पवव
 पपड्पवपवड्पवव
 पपढ्पवपवढ्पवव
 पपण्पवपवण्पवव
 पपत्रपवपवत्रवव
 पपथ्रपवपवथ्रवव
 पपद्रपवपवद्रवव
 पपध्रपवपवध्रवव
 पपन्नपवपवन्नवव
 पपप्रपवपवप्रवव
 पपफ्रपवपवफ्रवव
 पपब्रपवपवब्रवव
 पपभ्रपवपवभ्रवव
 पपम्रपवपवम्रवव
 पपग्रपवपवग्रवव
 पपरूपवपवरूपवव
 पपल्लपवपवल्लवव
 पपत्तपवपवत्तवव
 पपश्रपवपवश्रवव
 पपभ्रपवपवभ्रवव
 पपस्त्रपवपवस्त्रवव

पपळ्पवपवळ्वव
पपक्षपवपवक्षवव
पपज्जपवपवज्जवव

पपक्तपवपवक्तवव
पपङ्गपवपवङ्गवव
पपङ्गपवपवङ्गवव
पपङ्चपवपवङ्चवव
पपज्जपवपवज्जवव
पपज्थपवपवज्थवव
पपज्यपवपवज्यवव
पपज्सपवपवज्सवव
पपछ्यपवपवछ्यवव
पपट्यपवपवट्यवव
पपठ्यपवपवठ्यवव
पपड्यपवपवड्यवव
पपढ्यपवपवढ्यवव
पपटृपवपवटृवव
पपटुपवपवटुवव
पपठुपवपवठुवव
पपडूपवपवडूवव
पपडुपवपवडुवव
पपडूपवपवडूवव
पपत्तपवपवत्तवव
पपत्खपवपवत्खवव
पपत्थपवपवत्थवव
पपत्तपवपवत्तवव
पपत्सपवपवत्सवव
पपत्यपवपवत्यवव
पपद्धपवपवद्धवव
पपद्गपवपवद्गवव

पपद्भ्रपवपवद्भव
पपद्वपवपवद्वव
पपद्धपवपवद्धव
पपद्वापवपवद्वाव
पपदापवपवदाव
पपद्यापवपवद्याव
पपद्वपवपवद्वव
पपन्धपवपवन्धव
पपन्मपवपवन्मव
पपल्जपवपवल्लजव
पपल्यपवपवल्यव
पपल्भपवपवल्लभव
पपल्मपवपवल्लमव
पपल्यपवपवल्यव
पपश्रपवपवश्रव
पपश्चपवपवश्चव
पपश्नपवपवश्नव
पपष्टपवपवष्टव
पपष्ट्रपवपवष्ट्रव
पपष्ठपवपवष्ठव
पपष्त्रपवपवष्त्रव
पपल्लपवपवल्लव
पपह्नपवपवह्नव
पपह्नापवपवह्नाव
पपह्यापवपवह्याव
पपह्लपवपवल्लव
पपह्वपवपवह्वव

पपपापपरापपकापप
पपपिपपरिपपकिपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपींपपरींपपकींपप
पपपींंपपरींंपपकींंपप

**पपपाँपपरौंपपकाँपप
पपपाँपपरौंपपकाँपप
पपपोपपरौंपपकोपप
पपपोंपपरौंपपकोंपप
पपपाँपपरौंपपकाँपप
पपपोपपरौंपपकोपप
पपपोंपपरौंपपकोंपप
पपपाँपपरौंपपकाँपप
पपपोपपरौंपपकोपप
पपपोंपपरौंपपकोंपप
पपपाँपपरौंपपकाँपप**

पपपुपपरूपपकुपप
पपपूपपरूपपकूपप
पपपृपपरृपपकृपप
पपपृपपरृपपकृपप
पपपूपपरूपपकूपप
पपपुपपरूपपकुपप

[illegible]

पपपऽपवपववऽवव
पप?पवपव?वव
पपपःपवपववःवव

Numeral spacing

୦୦୦୦୧୦୧୦୧୧
 ୦୦୧୦୧୦୧୧୧୧
 ୦୦୨୦୧୦୧୨୧୧
 ୦୦୩୦୧୦୧୩୧୧
 ୦୦୪୦୧୦୧୪୧୧
 ୦୦୫୦୧୦୧୫୧୧
 ୦୦୬୦୧୦୧୬୧୧
 ୦୦୭୦୧୦୧୭୧୧
 ୦୦୮୦୧୦୧୮୧୧
 ୦୦୯୦୧୦୧୯୧୧

Letter-punct spacing

पपक, पवक.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपघ, पवघ.
पपङ, पवङ.
पपच, पवच.
पपछ, पवछ.
पपज, पवज.
पपझ, पवझ.
पपञ, पवञ.
पपट, पवट.
पपठ, पवठ.
पपड, पवड.
पपढ, पवढ.
पपण, पवण.
पपत, पवत.
पपथ, पवथ.
पपद, पवद.
पपध, पवध.

पपन, पवन.
पपप, पवप.
पपफ, पवफ.
पपब, पवब.
पपभ, पवभ.
पपम, पवम.
पपय, पवय.
पपर, पवर.
पपल, पवल.
पपळ, पवळ.
पपव, पवव.
पपश, पवश.
पपष, पवष.
पपस, पवस.
पपह, पवह.
पपक्र, पवक्र.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपज, पवज.
पपड़, पवड़.
पपढ़, पवढ़.
पपफ़, पवफ़.
पपय़, पवय़.
पपक्ष, पवक्ष.
पपज्ञ, पवज्ञ.

पपअ, पवअ.
 पपओ, पवओ.
 पपऑ, पवऑ.
 पपइ, पवइ.
 पपई, पवई.
 पपउ, पवउ.
 पपऊ, पवऊ.

पपए, पवए.
पपऐ, पवऐ.
पपँ, पवँ.
पपै, पवै.
पपआ, पवआ.
पपओ, पवओ.
पपऔ, पवऔ.
पपऋ, पवऋ.
पपॠ, पवॠ.
पपऌ, पवऌ.
पपॡ, पवॡ.

पपङ्ग, पवङ्ग.
पपछ्, पवछ्.
पपट्, पवट्.
पपठ्, पवठ्.
पपङ्ग, पवङ्ग.
पपट्, पवट्.
पपट्, पवट्.
पपर, पवर.
पपह, पवह.
पपळ, पवळ.

पपक्त, पवक्त.
पपङ्ग, पवङ्ग.
पपङ्ग, पवङ्ग.
पपट्, पवट्.
पपट्, पवट्.
पपठ्, पवठ्.
पपठ्, पवठ्.
पपड्, पवड्.
पपड्, पवड्.
पपड्, पवड्.
पपड्, पवड्.

पपद्, पवद्.
पपद्ध, पवद्ध.
पपद्ध, पवद्ध.
पपद्ध, पवद्ध.
पपद्ध, पवद्ध.
पपद्, पवद्.
पपष्ट, पवष्ट.
पपष्ट, पवष्ट.
पपष्ट, पवष्ट.
पपल्ल, पवल्ल.
पपल्ल, पवल्ल.
पपल्ल, पवल्ल.
पपल्ल, पवल्ल.

पपहु, पवहु.
पपहू, पवहू.
पपह्, पवह्.
पपह्र, पवह्र.
पपहु, पवहु.
पपहू, पवहू.
पपरु, पवरु.
पपरू, पवरू.
पपदु, पवदु.
पपदू, पवदू.
पपद, पवद.

-
पपक; पवकः
पपख; पवखः
पपग; पवगः
पपघ; पवघः
पपङ्; पवङ्ः

पपद्। पवद्।
पपष्ट। पवष्टः
पपष्ट्र। पवष्ट्रः
पपष्ठ। पवष्ठः
पपष्ठ्र। पवष्ठ्रः
पपल्ल। पवल्लः
पपल्ल। पवल्लः
पपल्ल। पवल्लः
पपल्ल। पवल्लः
पपहु। पवहुः
पपहू। पवहूः
पपहृ। पवहृः
पपहृ। पवहृः
पपहु। पवहुः
पपहू। पवहूः
पपरु। पवरुः
पपरू। पवरूः
पपदु। पवदुः
पपदू। पवदूः
पपदृ। पवदृः
-
पपक। पवकः?
पपख। पवखः?
पपग। पवगः?
पपघ। पवघः?
पपङ। पवङः?
पपच। पवचः?
पपछ। पवछः?
पपज। पवजः?
पपझ। पवझः?
पपञ। पवञः?

पपल्ल-ल्लपव
पपल्ल-ल्लपव
पपल्ल-ल्लपव
पपल्ल-ल्लपव

पपहु-हुपव
पपहू-हूपव
पपह-हपव
पपह-हपव
पपहु-हुपव
पपहू-हूपव
पपरु-रुपव
पपरू-रूपव
पपदु-दुपव
पपदू-दूपव
पपदृ-दृपव

-
"कपवपक"
"खपवपख"
"गपवपग"
"घपवपघ"
"ङपवपङ"
"चपवपच"
"छपवपछ"
"जपवपज"
"झपवपझ"
"ञपवपञ"
"टपवपट"
"ठपवपठ"
"डपवपड"
"ढपवपढ"
"णपवपण"

pg 11/18

pg 12/18

pg 13/18

पपध्कपपध्खपपघापपध्धपपध्ढपपध्धप
 पध्ठपपध्जपपध्झपपध्झपपध्ठपपध्ठपपध्ढप
 पध्ढपपघ्णपपघ्णपपध्थपपध्थपपध्दपपध्दपपध्जप
 पध्ज्ञपपध्मपपध्फपपध्फपपध्भपपध्भपपध्मपपध्मप
 पध्भपपध्भपपध्लपपध्लपपध्ळपपध्ळपपध्धप
 पध्शपपध्षपपध्षपपध्हपपध्हपपध्कपपध्कपपध्खपपध्घाप
 पध्जपपध्धपपध्धपपध्धपपध्धपपध्धप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप
 पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप
 पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप
 पइत्तपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप
 पइपपपइरपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप
 पइषपपइसपपइहपपइकपपइखपपइगपपइजप
 पइहपपइढपपइफपपइयपप

पपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्घपपङ्ङपपङ्चप
पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्ञपपङ्टपपङ्ठपपङ्प
पङ्फपपङ्णपपङ्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नप
पङ्नपपङ्पपपङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपपङ्यप
पङ्रपपङ्लपपङ्ळपपङ्ळपपङ्वपपङ्शप
पङ्षपपङ्सपपङ्हपपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्जप
पङ्डपपङ्ढपपङ्फपपङ्यपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप
पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्झपपढ्ठपपढ्ठपपढ्डप
पढ्ढपपढ्णपपढ्णपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप
पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप
पढ्द्रपपढ्द्रपपढ्दलपपढ्ळपपढ्ळपपढ्वपपढ्शप
पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप
पढ्ङपपढ्ढपपढ्फपपढ्घपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्ङपपण्चप
पण्छपपण्जपपण्झपपण्झपपण्ठपपण्ठपपण्डप
पण्ढपपण्णपपण्णपपण्थपपण्दपपण्धपपण्नप
पण्णपपण्पपपण्फपपण्बपपण्भपपण्मपपण्यप
पण्द्रपपण्द्रपपण्दलपपण्ळपपण्ळपपण्वपपण्शप
पण्षपपण्सपपण्हपपण्कपपण्खपपण्गपपण्जप
पण्ङपपण्ढपपण्फपपण्घपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप
पत्जपपत्झपपत्झपपत्ठपपत्ठपपत्डपपत्डपपत्णप
पत्तपपत्थपपत्दपपत्धपपत्नपपत्नपपत्पपपत्फप
पत्बपपत्भपपत्मपपत्त्यपपत्त्रपपत्त्रपपत्लपपत्लप
पत्ळपपत्त्वपपत्शपपत्षपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप
पत्गपपत्जपपत्ङपपत्ढपपत्फपपत्घपप

पपथ्कपपथ्खपपथ्गपपथ्घपपथ्ङपपथ्चपपथ्छप
पथ्जपपथ्झपपथ्झपपथ्ठपपथ्ठपपथ्डपपथ्डप
पथ्णपपथ्णपपथ्थपपथ्दपपथ्धपपथ्नपपथ्नप
पथ्पपपथ्फपपथ्बपपथ्भपपथ्मपपथ्यपपथ्प
पथ्द्रपपथ्द्रपपथ्दलपपथ्ळपपथ्ळपपथ्वपपथ्शपपथ्षप
पथ्सपपथ्हपपथ्कपपथ्खपपथ्गपपथ्जपपथ्ङप
पथ्ढपपथ्फपपथ्घपप

पपद्कपपपद्खपपपद्गपपपद्घपपपद्ङपपपद्चप
पपद्छपपपद्जपपपद्झपपपद्झपपपद्ठपपपद्ठप
पपद्डपपपद्ढपपपद्णपपपद्णपपपद्थपपपद्दपपपद्दप
पपद्नपपपद्नपपपद्पपपपद्फपपपद्बपपपद्भपपपद्भप
पपद्द्यपपपद्द्रपपपद्द्रपपपद्दलपपपद्ळपपपद्ळपपपद्वप
पपद्शपपपद्षपपपद्सपपपद्हपपपद्कपपपद्खप
पपद्गपपपद्जपपपद्ङपपपद्ढपपपद्फपपपद्घपप

पपध्कपपध्खपपध्गपपध्घपपध्ङपपध्चप
पध्छपपध्जपपध्झपपध्झपपध्ठपपध्ठपपध्डप
पध्ढपपध्णपपध्णपपध्थपपध्दपपध्धपपध्नप
पध्णपपध्पपपध्फपपध्बपपध्भपपध्मपपध्यप
पध्द्रपपध्द्रपपध्दलपपध्ळपपध्ळपपध्वपपध्शप
पध्षपपध्सपपध्हपपध्कपपध्खपपध्गपपध्जप
पध्ङपपध्ढपपध्फपपध्घपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्ङपपन्चपपन्छप
पन्जपपन्झपपन्झपपन्ठपपन्ठपपन्डपपन्डप
पन्णपपन्णपपन्णपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्नप
पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्त्यपपन्त्रपपन्त्रपपन्लप
पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्षपपन्सपपन्हपपन्कप
पन्खपपन्गपपन्जपपन्ङपपन्ढपपन्फपपन्घपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप
पत्जपपत्झपपत्झपपत्ठपपत्ठपपत्डपपत्डप
पत्तपपत्तपपत्थपपत्दपपत्धपपत्नपपत्नपपत्पप
पत्फपपत्बपपत्भपपत्मपपत्त्यपपत्त्रपपत्त्रपपत्लप
पत्ळपपत्ळपपत्त्वपपत्शपपत्षपपत्सपपत्हपपत्कप
पत्खपपत्गपपत्जपपत्ङपपत्ढपपत्फपपत्घपप

पपप्कपपप्खपपप्गपपप्घपपप्ङपपप्चपपप्छप
पप्जपपप्झपपप्झपपप्ठपपप्ठपपप्डपपप्डप
पप्तपपप्थपपप्दपपप्धपपप्नपपप्पपपप्फप
पप्बपपप्भपपप्मपपप्त्यपपप्त्रपपप्त्रपपप्लप
पप्ळपपप्त्वपपप्शपपप्षपपप्सपपप्हपपप्कपपप्खप
पप्गपपप्जपपप्ङपपप्ढपपप्फपपप्घपप

पपफ्कपपफ्खपपफ्गपपफ्घपपफ्ङपपफ्चप
पफ्छपपफ्जपपफ्झपपफ्झपपफ्ठपपफ्ठपपफ्डप
पफ्ढपपफ्णपपफ्णपपफ्थपपफ्दपपफ्धपपफ्नप
पफ्णपपफ्पपपफ्फपपफ्बपपफ्भपपफ्मपपफ्यप
पफ्द्रपपफ्द्रपपफ्दलपपफ्ळपपफ्ळपपफ्वपपफ्शप
पफ्षपपफ्सपपफ्हपपफ्कपपफ्खपपफ्गपपफ्जप
पफ्ङपपफ्ढपपफ्फपपफ्घपप

पपब्कपपब्खपपब्गपपब्घपपब्ङपपब्चपपब्छप
पब्जपपब्झपपब्झपपब्ठपपब्ठपपब्डपपब्डप
पब्तपपब्थपपब्दपपब्धपपब्नपपब्नपपब्पप
पब्फपपब्बपपब्भपपब्मपपब्त्यपपब्त्रपपब्त्रप
पब्लपपब्ळपपब्त्वपपब्शपपब्षपपब्सपपब्हप
पब्कपपब्खप
पब्गपपब्जपपब्ङपपब्ढपपब्फपपब्घपप

पपभ्कपपभ्खपपभ्गपपभ्घपपभ्ङपपभ्चपपभ्छप
पभ्जपपभ्झपपभ्झपपभ्ठपपभ्ठपपभ्डपपभ्डप
पभ्णपपभ्णपपभ्थपपभ्दपपभ्धपपभ्नपपभ्नप
पभ्पपपभ्फपपभ्बपपभ्भपपभ्मपपभ्यपपभ्प
पभ्द्रपपभ्द्रपपभ्दलपपभ्ळपपभ्ळपपभ्वपपभ्शप
पभ्षपपभ्सपपभ्हपपभ्कपपभ्खपपभ्गपपभ्जप
पभ्ङपपभ्ढपपभ्फपपभ्घपप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्यपपम्डपपम्यपपम्छप
 पम्जपपम्झपपम्जपपम्टपपम्ठपपम्डपपम्ढप
 पम्णपपम्तपपम्यपपम्दपपम्यपपम्नपपम्नपपम्पप
 पम्फपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यपपम्भपपम्भपपम्भप
 पम्ळपपम्ळपपम्भपपम्भपपम्भपपम्भपपम्भप
 पम्क्रपपम्खपपम्गपपम्जपपम्डपपम्ढपपम्फप
 पम्यपप

पपय्कपपय्खपपय्गपपय्थपपय्ढपपय्चपपय्छप
 पय्जपपय्झपपय्जपपय्टपपय्ठपपय्डपपय्ढप
 पय्णपपय्त्तपपय्थपपय्दपपय्थपपय्न्पपय्न्पपय्यप
 पय्फपपय्बपपय्भपपय्मपपय्यपपय्भपपय्भपपय्भप
 पय्ळपपय्ळपपय्भपपय्भपपय्भपपय्भपपय्भप
 पय्क्रपपय्खपपय्गपपय्जपपय्डपपय्ढपपय्फप
 पय्यपप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्धपपर्डपपर्चपपर्छपपर्जप
 पर्झपपर्जपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्ठपपर्णपपर्तपपर्थप
 पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्भप
 पर्यपपर्परपपर्परपपर्लपपर्लपपर्लपपर्लपपर्लप
 पर्षपपर्सपपर्हपपर्कपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्दप
 पर्फपपर्यपप

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्थपपक्ढपपक्चपपक्छप
 पक्जपपक्झपपक्जपपक्टपपक्ठपपक्डपपक्ढपक्णप
 पक्त्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नपपक्नपपक्पपक्फप
 पक्बपपक्भपपक्भपपक्भपपक्भपपक्भपपक्भप
 पक्ळपपक्ळपपक्भपपक्भपपक्भपपक्भपपक्भप
 पक्क्रपपक्खपपक्गपपक्जपपक्डपपक्ढपपक्फपपक्यपप

पपल्कपपल्खपपल्गपपल्थपपल्ढपपल्चपपल्छप
 पल्जपपल्झपपल्जपपल्टपपल्ठपपल्डपपल्ढप
 पल्णपपल्त्तपपल्थपपल्दपपल्थपपल्नपपल्नप
 पल्मपपल्फपपल्बपपल्भपपल्मपपल्मपपल्मप
 पल्रपपल्लपपल्ळपपल्ळपपल्वपपल्शपपल्षप
 पल्सपपल्हपपल्क्रपपल्खपपल्गपपल्जपपल्डप
 पल्ढपपल्फपपल्मपप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप
 पळछपपळजपपळझपपळअपपळटपपळठप
 पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप
 पळधपपळनपपळनपपळपपपळफपपळबप
 पळभपपळमपपळयपपळ्ळपपळरपपळलपपळळप
 पळळपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप
 पळक्रपपळखपपळगपपळजपपळङप
 पळढपपळफपपळयपप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप
 पळछपपळजपपळझपपळअपपळटपपळठप
 पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप
 पळधपपळनपपळनपपळपपपळफपपळबप
 पळभपपळमपपळयपपळ्ळपपळरपपळलप
 पळळपपळळपपळवपपळशपपळषपपळसप
 पळहपपळक्रपपळखपपळगपपळजपपळङप
 पळढपपळफपपळयपप

पपळ्कपपळ्खपपळ्गपपळ्थपपळ्ढपपळ्चपपळ्छप
 पळ्जपपळ्झपपळ्जपपळ्टपपळ्ठपपळ्डपपळ्ढपळ्णप
 पळ्त्तपपळ्थपपळ्दपपळ्थपपळ्न्पपळ्न्पपळ्पपळ्फप
 पळ्बपपळ्भपपळ्भपपळ्भपपळ्भपपळ्भपपळ्भप
 पळ्ळपपळ्ळपपळ्भपपळ्भपपळ्भपपळ्भपपळ्भप
 पळ्क्रपपळ्खपपळ्गपपळ्जपपळ्डपपळ्ढपपळ्फपपळ्मपप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्घपपश्ङपपश्चपपश्छप
 पश्जपपश्झपपश्जपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप
 पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्थपपश्नपपश्नप
 पश्पपपश्फपपश्बपपश्भपपश्मपपश्मपपश्मप
 पश्रपपश्लपपश्ळपपश्ळपपश्श्चपपश्शपपश्षप
 पश्सपपश्हपपश्क्रपपश्खपपश्गपपश्जपपश्ङप
 पश्ढपपश्फपपश्मपप

पपष्कपपष्खपपष्गपपष्घपपष्ङपपष्चपपष्छप
 पष्जपपष्झपपष्जपपष्टपपष्ठपपष्डपपष्ढपष्णप
 पष्त्तपपष्थपपष्दपपष्थपपष्न्पपष्न्पपष्पपष्फप
 पष्बपपष्भपपष्भपपष्भपपष्भपपष्भपपष्भप
 पष्ळपपष्ळपपष्भपपष्भपपष्भपपष्भपपष्भप
 पष्क्रपपष्खपपष्गपपष्जपपष्डपपष्ढपपष्फपपष्मपप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्ङपपस्चप
 पस्छपपस्जपपस्झपपस्जपपस्टपपस्ठपपस्डप
 पस्ढपपस्णपपस्त्तपपस्थपपस्दपपस्थपपस्नप
 पस्नपपस्पपपस्फपपस्बपपस्भपपस्मपपस्मप
 पस्मपपस्रपपस्लपपस्ळपपस्ळपपस्वपपस्शप
 पस्षपपस्सपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गपपस्जप
 पस्ङपपस्ढपपस्फपपस्मपप

पपह्कपपह्खपपह्गपपह्घपपह्ङपपह्चपपह्छप
 पह्जपपह्झपपह्जपपह्टपपह्ठपपह्डपपह्ढप
 पह्णपपह्त्तपपह्थपपह्दपपह्थपपह्न्पपह्न्पपह्पपह्फप
 पह्बपपह्भपपह्भपपह्भपपह्भपपह्भपपह्भप
 पह्ळपपह्ळपपह्भपपह्भपपह्भपपह्भपपह्भप
 पह्क्रपपह्खपपह्गपपह्जपपह्डपपह्ढप
 पह्फपपह्मपप

less common half-forms

पपक्षकपपक्षखपपक्षगपपक्षघपपक्षङपपक्षचप
पक्षछपपक्षजपपक्षझपपक्षञपपक्षटपपक्षठपपक्षडप
पक्षढपपक्षणपपक्षतपपक्षथपपक्षदपपक्षधपपक्षनप
पक्षमपपक्षफपपक्षबपपक्षभपपक्षमपपक्षयपपक्षलप
पक्षळपपक्षपपवपपक्षशपपक्षषपपक्षसपपक्षहपप

पपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्घपपङ्ङपपङ्चप
पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्ञपपङ्टपपङ्ठपपङ्डप
पङ्ढपपङ्णपपङ्त्तपपङ्थपपङ्द्दपपङ्धपपङ्ज्ञपपङ्गप
पङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपप पपङ्यपपङ्ग्लपपङ्ळप
पङ्पपपवपपङ्शपप पपङ्षपपङ्सपपङ्हपप

पपदकपपदखपपदगपपदघपपदङपपदचपपदछप
पदजपपदझपपदञपपदटपपदठपपदडपपदढप
पदणपपदतपपदथपपददपपदधपपदनपपदमप
पदफपपदबपपदभपपदमपप पदयपपदलप
पदळपपदमपवपपदशपप पपदषपपदसपपदहपप

पपश्रूपपश्चपपश्चापपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप
पश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप
पश्चापपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप
पश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप
पश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप

पपशूक्तपपशूखपपशूगपपशूघपपशूङपपशूचपपशूउप
पशूजपपशूझपपशूञपपशूटपपशूठपपशूडपपशूढप
पशूणपपशूनपपशूथपपशूदपपशूधपपशूनपपशूपप
पशूफपपशूबपपशूभपपशूमपपपशूयपपशूलप
पशूळपपशूवपपशूषापपपशूषपपशूसपपशूहपप

पपत्रकपपत्रखपपत्रगापपत्रघपपत्रङपपत्रचप
पत्रछपपत्रजपपत्रझपपत्रञपपत्रटपपत्रठप
पत्रडपपत्रढपपत्रणपपत्रतपपत्रथपपत्रदप
पत्रधपपत्रनपपत्रपपपत्रफपपत्रबपपत्रभपपत्रमप
पपत्रयपपत्रलपपत्रळपपत्रप्पवपपत्रशप
पपत्रषपपत्रसपपत्रहपप

पपरूकपपरूखपपरूणपपरूयपपरूडपपरूचप
 पपरूठपपरूजपपरूझपपरूअपपरूटपपरूठप
 पपरूडपपरूटपपरूणपपरूतपपरूथपपरूदपपरूधप
 पपरूनपपरूपपपरूफपपरूबपपरूभपपरूमप
 पपरूयपपरूलपपरूळपपरूपपपरूशप
 पपरूषपपरूसपपरूहपप

पपक्रपपग्रुपपग्रापपग्रपपग्रुपपग्रुपपग्रुप
पग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुप
पग्रापपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुप
पग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुप
पग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुप
पग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुपपग्रुप

पपघ्रकपपघ्रखपपघ्रापपघ्रयपपघ्रपपघ्रवपपघ्रउप
पघ्रजपपघ्रझपपघ्रञपपघ्रटपपघ्रठपपघ्रडपपघ्रढप
पघ्रापपघ्रतपपघ्रथपपघ्रदपपघ्रधपपघ्रनपपघ्रमप
पघ्रफपपघ्रबपपघ्रभपपघ्रमपप पघ्रयपपघ्रलपपघ्रळप
पघ्रमपपघ्रपघ्रशपप पघ्रषपपघ्रसपपघ्रहपप

पपक्कपपक्खपपच्चापपच्चपपच्छपपच्चपपच्छप
पच्चापपच्छापपच्चपपच्छपपच्छपपच्छपपच्छप
पच्चापपच्चापपच्चपपच्छपपच्चपपच्चपपच्चप
पक्कपपक्खपपच्चपपच्चपपच्चपपच्चपपच्चप
पच्चपपच्चपपच्चपपच्चपपच्चपपच्चपपच्चप

**पपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्घपपङ्हपपङ्ठप
पङ्गपपङ्हापपङ्गपपङ्ठपपङ्हपपङ्ठप
पङ्गापपङ्गापपङ्थापपङ्थपपङ्जपपङ्जाप
पङ्फपपङ्भपपङ्मपपङ्मपपङ्मपपङ्मप
पङ्ळपपङ्मपपङ्शपपङ्षपपङ्सपपङ्हप**

पपइकपपइखपपइगापपइघपपइहपपइचप
पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप
पइढपपइणापपइत्तपपइथपपइदपपइधपपइनप
पइमपपइमृपपइबपपइभपपइमपपपपइयप
पइलपपइळपपइमपवपपइशपपइषपपइसप
पइहपप

पपञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्चपपञ्च
पञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्चपपञ्च
पञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्चापपञ्चपपञ्च
पञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्च
पञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्च
पञ्चपप

पपण्क्कपपण्खुपपण्णपपण्घपपण्हपपण्चपपण्छप
पण्जपपण्ह्यपपण्झपपण्ठपपण्ठपपण्हपपण्हप
पण्णपपण्णतपपण्थपपण्दपपण्धपपण्जपपण्मप
पण्फपपण्णपपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्णप
पण्ळपपण्मपवपपण्शपप पपण्षपपण्सपपण्हपप

पपत्रकपपत्रखपपत्रापपत्र्यपपत्र्हपपत्र्यपपत्रूप
पत्रजपपत्रझपपत्रञपपत्रटपपत्रठपपत्रडपपत्रढपपत्रणप
पत्रतपपत्रथपपत्रद्दपपत्रथपपत्रजपपत्रयपपत्रफपपत्रषप
पत्रभपपत्रमपपत्रपत्र्यपपत्रलपपत्रळपपत्रपवप
पत्रशपपत्रषपपत्रसपपत्रहपपत्र

पपश्रकपपश्रखपपश्रापपश्रघपपश्रङपपश्रचपपश्रछप
 पश्रजपपश्रझपपश्रञपपश्रटपपश्रठपपश्रडपपश्रढप
 पश्रणपपश्रतपपश्रथपपश्रदपपश्रधपपश्रनपपश्रमप
 पश्रफपपश्रबपपश्रभपपश्रमपप पपश्रयपपश्रलप
 पश्रळपपश्रपवपपश्रापप पपश्रषपपश्रसपपश्रहपप

पपध्रकपपध्रखपपध्रापपध्रघपपध्रङपपध्रचपपध्रछप
 पध्रजपपध्रझपपध्रञपपध्रटपपध्रठपपध्रडपपध्रढप
 पध्रणपपध्रतपपध्रथपपध्रदपपध्रधपपध्रनपपध्रमप
 पध्रफपपध्रबपपध्रभपपध्रमपप पपध्रयपपध्रलप
 पध्रळपपध्रपवपपध्रापप पपध्रषपपध्रसपपध्रहपप

पपन्त्रकपपन्त्रखपपन्त्रापपन्त्रघपपन्त्रङपपन्त्रचपपन्त्रछप
 पन्त्रजपपन्त्रझपपन्त्रञपपन्त्रटपपन्त्रठपपन्त्रडपपन्त्रढप
 पन्त्रणपपन्त्रतपपन्त्रथपपन्त्रदपपन्त्रधपपन्त्रनपपन्त्रमप
 पन्त्रफपपन्त्रबपपन्त्रभपपन्त्रमपप पपन्त्रयपपन्त्रलप
 पन्त्रळपपन्त्रपवपपन्त्रापप पपन्त्रषपपन्त्रसपपन्त्रहपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रापपप्रघपपप्रङपपप्रचपपप्रछप
 पप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठपपप्रडपपप्रढपपप्रणप
 पप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधपपप्रनपपप्रमपपप्रफपपप्रबप
 पप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रळपपप्रपवप
 पप्रशपप पपप्रषपपप्रसपपप्रहपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगापपप्रघपपप्रङपपप्रचप
 पप्रछपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप
 पप्रडपपप्रढपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधप
 पप्रनपपप्रमपपप्रफपपप्रबपपप्रभपपप्रमपप
 पपप्रयपपप्रलपपप्रळपपप्रपवपपप्रशपप
 पपप्रषपपप्रसपपप्रहपप

पपब्रकपपब्रखपपब्रापपब्रघपपब्रङपपब्रचपपब्रछप
 पब्रजपपब्रझपपब्रञपपब्रटपपब्रठपपब्रडपपब्रढप
 पब्रणपपब्रतपपब्रथपपब्रदपपब्रधपपब्रनपपब्रमपपब्रफप
 पब्रबपपब्रभपपब्रमपप पपब्रयपपब्रलपपब्रळपपब्रपव
 पपब्रशपप पपब्रषपपब्रसपपब्रहपप